1st Choice

Date / /

चन्द्र का मेहरौली स्तम्भ

यह स्तम्भ लेख दिल्ली से 9 मील दक्षिण मे मेहरौली नामक स्थान पर कुतुबमीनार के निकट लौह स्तम्भ पर उत्कीर्ण है। इसमे उल्लेखित नरेश का नाम चन्द्र दिया गया है, जो विवादास्पद है।

प्रारंभ मे यह देहली लौह स्तम्भ नाम से प्रसिद्ध था। फ्लीट ने इसे मेहरौली लौह स्तम्भ नाम दिया यह लेख 23 फुट 8 इंच ऊँचा है।

1834 ई० मे पहली बार प्रिन्सेप ने इस लेख को लेफ्टिनेन्ट डब्ल्यू० ईलियट द्वारा 1839 ई० 1871 ई० मे भाऊ दाजी ने इसका एक संशोधित पाठ और अनुवाद रॉयल एशियाटिक सोसायटी की बम्बई शाखा के समक्ष उपस्थित किया जो 4 वर्ष पश्चात 1875 ई० मे प्रकाशित हुआ। फ्लीट ने इसका सम्पादन किया इसमे 6 पंक्तियाँ है इस लेख मे कोई तिथि नही दी गई है और नही चन्द्र का वंश परिचय दिया गया है। अतः लिपि का समय चन्द्र का समय माना जा सकता है। प्रिन्सेप ने इसकी लिपि का समय 3-4 शताब्दी ई० बताई है हॉर्नले ने लगभग 410 ई० व सरकार ने 5वी शताब्दी ई० माना है। अतः इस लिपि को 400 ई० सन् के कुछ पहले का कुछ बाद का माना जा सकता है। इस लेख का उद्देश्य चन्द्र के विष्णुपद नामक पहाडी पर विष्णु ध्वज की स्थापना का उल्लेख करना है। इस दृष्टि से यह वैष्णव अभिलेख है विष्णुध्वज से आशय सम्भवतः लौह स्तंभ से है। जिस पर यह लेख अंकित किया गया है।

Scanned by CamScanner

चन्द्र का मेहरौली स्तम्भ लेख राजनीतिक, धार्मिक साहित्यिक आदि दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

(1) राजनैतिक महत्व :- मेहरौली अभिलेख गुप्त काल का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण लेख है। इस लेख का राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें उल्लेखित चन्द्र नरेश के साम्राज्य की सीमाओं का ज्ञान होता है अभिलेख की पंक्ति में उल्लेख आता है कि चन्द्र ने पूर्व में बंगाल, उत्तर-प० में सप्त सिन्धु तथा द० में हिंद महासागर तथा विजय यात्रा की थी। तथा चन्द्र द्वारा वाह्लीकों को परास्त किया गया था। अतः इस लेख से उसके साम्राज्य विस्तार की जानकारी प्राप्त होती है।

आधार पर इस लेख में उल्लेखित चन्द्र की पहचान समुद्रगुप्त की की जाती है

सरकार के अनुसार इस लेख में काल्पनिक क्षेत्र की सीमा पूर्व में बंग, प० में सप्तमुखानि सिन्धो उत्तर में वाह्लीक और द० में दक्षिण जल निधि बतायी गयी है। यह लेख अत्यंत तथ्यात्मक है, काल्पनिक नहीं। अतः इसी अभिलेख में वर्णित है कि बंग में संगठित रूप से आक्रमण करने के लिए उद्यत शत्रुओं को परास्त किया तथा सिन्धु के सात मुखों को पार करके तथा वाह्लिकों पर विजय प्राप्त की उसने द० में भी सफलताएँ अर्जित की थी। तथा एकाधिराज्य स्थापित किया।

अतः इन उपलब्धियों से ज्ञात होता है कि उसके साम्राज्य में बंगाल से लेकर पंजाब के बीच का भाग ~~उसके~~ सम्मिलित था। अतः इस प्रकार मेहरौली स्तम्भ लेख राज० दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

1st Choice

Date / /

(2) धार्मिक महत्व:- चन्द्र का मेहरौली स्तम्भ लेख धार्मिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस लेख की स्थापना का उद्देश्य चन्द्र द्वारा विष्णुपद गिरि पर विष्णुध्वज के रूप में इसकी स्थापना करना था। जिससे ज्ञात होता है कि चन्द्र वैष्णव धर्म को मानने वाला था तथा वह वैष्णव पुजारी को संरक्षण प्रदान करता था। इस लेख से ज्ञात होता है चन्द्र वैष्णव धर्म का प्रवर्तक था तथा इस समय वैष्णव धर्म का पुनरुत्थान हो रहा था अतः वैष्णव धर्म की महत्ता को स्थापित करने के लिए ही विष्णुध्वज की स्थापना करने का कार्य चन्द्र ने किया था।

अतः इस प्रकार यह लेख धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

(3) साहित्यिक महत्व:- यह अभिलेख सा॰ दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इस लेख के रचयिता का नाम ज्ञात नहीं है। चट्टोपाध्याय ने इसकी पहचान उदयगिरि लेख में उल्लेखित वीरसेन नामक मन्त्री से की है। कवि ने इस लेख में नरेश की दिग्विजय का संक्षेप में वर्णन किया है। उसने सरल, असमस्त या लघु समस्त पदों का प्रयोग करके उसने अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के साथ भाषा के प्रवाह को बनाए रखा है। इस लेख में तीनों श्लोक शार्दूलविक्रीडित छंद में है। प्रथम श्लोक में राजा के शौर्य पर अग्नि का आरोपण है। दूसरे चन्द्र के स्वर्गगामी होने की उत्प्रेक्षा इस प्रकार की गई है कि मानो वह पृथ्वी का भार वहन करते थके हुए के समान लोकान्तरगामी हो गया।

इस प्रकार तीनों श्लोकों में कवि ने उपमा उत्प्रेक्षा जैसे अलंकारों का प्रयोग कर अलंकार शास्त्र में अपना अपर्याप्त परिचय प्रकट किया है। यह लेख संस्कृत भाषा में है जिससे ज्ञात होता है कि संस्कृत भाषा का पूर्णतः विकास हो चुका होगा।

अतः इस प्रकार चन्द्र के मेहरौली लेख का साहित्यिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है।

* चन्द्र की पहचान *

अभिलेख में उल्लेखित नरेश चन्द्र की पहचान को लेकर विद्वानों में मतभेद है इसकी पहचान को लेकर अनेक मत प्रचलित हैं। यह समस्या इसलिए बनी हुई है क्योंकि इस लेख में न तो राजा का पूरा नाम है न कोई वंश न तिथि। इसलिए चन्द्र की पहचान के सम्बन्ध में निम्न मत प्रचलित हैं।

(1) हरिश्चन्द्र सेठ का यह मत है कि लौह-स्तम्भ की स्थापना करने वाला 'चन्द्र' चन्द्रगुप्त मौर्य था तथा इस लेख चन्द्रगुप्त II ने लिखवाया। लेकिन सेठ का यह मत ऐतिहासिक दृष्टि से स्वीकृत नहीं है। क्योंकि चन्द्रगुप्त मौर्य न तो वैष्णव था न ही उसने वाह्लिकों को परास्त किया था। तथा इस स्तम्भ की कला को 400 ई. पू के लगभग स्वीकार किया गया है। अतः इस आधार पर सेठ के मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

(1st Choice)

② R.C मजूमदार ने सुझाव रखा है कि उस लेख मे उल्लेखित चन्द्र कनिष्क हो सकता है क्यो कि खोतनी पाण्डुलिपि मे कनिष्क को चन्द्र चन्द्र कनिष्क नाम कहा गया है लेकिन इस सुझाव / मत को स्वीकार नही किया जा सकता है क्यो कि कनिष्क न तो वैष्णव था और नाही उसने दक्षिण मे कोई सामरिक सफलता अर्जित की थी, न ही उसने वाहिलको को परास्त किया था वाहिलक तो कनिष्क का एक प्रकार से मूल निवास स्थान था। अतः मजूमदार का यह मत असम्भावित प्रतीत होता है।

③ R.P जायसवाल, राधाकुमुद मुखर्जी, गंगाप्रसाद मेहता, D.R शर्मा, D.C सरकार, घोष आदि विद्वान चन्द्र की पहचान चन्द्रगुप्त II से करते है। उन्होने अपने इस मत के सम्बन्ध मे निम्न लिखित प्रमाण दिए है कि -

① दोनो राजाओ के नाम एक है तथा चन्द्र के समान चन्द्रगुप्त II भी वैष्णव था। उसका भी साम्राज्य पंजाब से बंगाल तक विस्तृत था अतः सम्भवतः चन्द्रगुप्त II ने वंग तथा

② वाहिलको के विरुद्ध युद्ध भी लड़े हो ③ द. भारत पर भी उसका प्रभाव था क्यो कि उसकी पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन II से हुआ था। अतः वह इन प्रमाणो के आधार पर चन्द्र को चन्द्रगुप्त II स्वीकार करते है परंतु इस मत को स्वीकार नही किया जा सकता क्यो कि चन्द्र ने एकाधिराज्य की स्थापना अपनी भुजाओ के बल से की थी। जब कि चन्द्रगुप्त II ने पंजाब से बंगाल तक का साम्राज्य अपने पिता से

उत्तराधिकार में प्राप्त किया था अथवा उसने वाह्लिकों के विरुद्ध युद्ध लड़ा अथवा नहीं इसका कोई प्रमाण भी प्राप्त नहीं होता

अतः उपरोक्त आधारों में पाई गयी भिन्नता के आधार पर चन्द्र को चन्द्रगुप्त II स्वीकार नहीं किया जा सकता है

(4) अभिलेख में वर्णित शब्द चन्द्र (शासक) की सफलताओं के आधार पर उसके नरेश को खोजने पर यह समस्या सरल हो जाती है लगभग पाँचवी ई. से कुछ पहले हमें नरेश को खोजना चाहिए जो चन्द्र की सफलताओं के समान हो अतः इस में समुद्रगुप्त का नाम आता है समुद्रगुप्त की सफलताओं के आधार पर उसे चन्द्र के मेहरौली का नरेश माना जा सकता है (1) समुद्रगुप्त को, प्रयाग प्रशस्ति में "स्वभुजार्जित एकाधिराज्य" स्थापित करने वाला कहा गया है (2) C.M के बाद राजपूत युग तक वह एक मात्र राजा है जिसके लिए यह दावा किया जा सकता है (3) उसने बंगाल के चन्द्रवर्मा का उन्मूलन किया और समतट (द. पूर्वी बंगाल) डवाक (डवाक प्रदेश) व कामरूप (असम) को अपने प्रत्यन्त राज्य बनाया अतः उसने बंग को स्वयं जीता था (4) समुद्रगुप्त ने 12 राजाओं को द. में परास्त कर कांची व सम्भवतः केरल तक यात्रा की थी।

(5) प्रयाग प्रशस्ति में देवपुत्र शाहि जिसकी पहचान पेशावर पर शासन करने वाले कुषाण राजा किदार से की है समुद्रगुप्त के अधीन था उसके ऊपर 370 ई. में वाह्लिक को

(6)

से आने वाले हूणों ने आक्रमण किया था अतः समुद्रगुप्त अपने अधीन मित्र की सहायता के लिए सात सिंधु को पार कर वाहिलको का प्रतिरोध करने गया होगा अतः समुद्रगुप्त भी वैष्णव था उसने गरुड़ को अपना राज्य चिन्ह बनाया था।

अतः इस प्रकार समुद्रगुप्त की सफलताएं चन्द्र की सफलताओं मे समानता थी। वासुदेव शरण अग्रवाल, स्मिथ, R.K मुखर्जी, मजूमदार आदि विद्वान वामन द्वारा उल्लेखित चन्द्रगुप्त के पुत्र चन्द्रप्रकाश की भी पहचान समुद्रगुप्त से करते हैं। अतः समुद्रगुप्त का दूसरा नाम चन्द्रप्रकाश था उसकी पहचान अभिलेख मे वर्णित नरेश चन्द्र से करना अनुचित नही होगा।

उपरोक्त मतों के आधार पर तथा उनमे पायी जाने वाली भिन्नता व भिन्नरूपता के आधार पर यह निश्चित नही किया जा सकता है कि चन्द्र वास्तव मे कौन था। क्योंकि कुछ विद्वान चन्द्र को समुद्रगुप्त से जोड़ते हैं तो कुछ कनिष्क तो कुछ चन्द्रगुप्त II से। अतः इस विवादग्रस्त गुत्थी को अभी सुलझाया नही जा सका है।